डा. राजीव कुमार,
इतिहास विभाग,
एच.डी.जैन कॉलेज, आरा

Topic : शेरशाह सूरी की प्रशासनिक नीतियाँ, बिहार के सन्दर्भ में।

Administrative policies of Shershah Suri in the context or Bihar.

विश्लेषण :

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में शेरशाह सूरी (1540–1545 ई.) का शासनकाल अल्पकालिक होने के बावजूद अत्यंत प्रभावशाली रहा। विशेषकर बिहार के संदर्भ में उसकी प्रशासनिक नीतियाँ सुव्यवस्थित शासन, आर्थिक स्थिरता और राजनैतिक एकीकरण का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। बिहार शेरशाह का मूल क्षेत्र था; उसका जन्म सासाराम (वर्तमान बिहार) में हुआ और यहीं से उसने अपनी शक्ति का विस्तार किया। अतः बिहार उसकी प्रशासनिक प्रयोगशाला भी था और साम्राज्य का महत्वपूर्ण केंद्र भी।

1. प्रशासनिक पुनर्गठन और प्रांतीय व्यवस्था :

शेरशाह ने प्रशासन को केंद्रीकृत और सुव्यवस्थित बनाया। उसने साम्राज्य को सूबा – सरकार – परगना – ग्राम इकाइयों में विभाजित किया। बिहार में भी यही व्यवस्था लागू की गई।

सूबा (प्रांत): सूबेदार के अधीन प्रशासनिक नियंत्रण।

सरकार (जिला): शिकदार-ए-शिकदारान और मुंसिफ के माध्यम से राजस्व और न्याय व्यवस्था।

परगना: आमिल (राजस्व अधिकारी) और क़ानूनगो की नियुक्ति।

ग्राम: मुखिया और पटवारी के माध्यम से स्थानीय प्रशासन।

बिहार में इस संरचना के कारण शासन अधिक संगठित और उत्तरदायी बना। भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए अधिकारियों का नियमित स्थानांतरण किया जाता था।

2. राजस्व व्यवस्था और भूमि सुधार :

शेरशाह की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि उसकी राजस्व नीति थी। बिहार कृषि प्रधान क्षेत्र था, इसलिए यहाँ राजस्व सुधारों का विशेष प्रभाव पड़ा।
भूमि की माप (मसाहत) करा कर उपज का आकलन किया गया।
भूमि को उपज के आधार पर तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया।
औसत उपज के आधार पर राज्य का हिस्सा लगभग एक-तिहाई निर्धारित किया गया।
किसानों को पट्टा (भूमि का लिखित विवरण) और कबूलियत (कर देने की स्वीकृति) दी गई।
इस व्यवस्था ने किसानों को सुरक्षा प्रदान की और जमींदारों की मनमानी पर अंकुश लगाया। बिहार में कृषि उत्पादन और राज्य आय दोनों में वृद्धि हुई। आगे चलकर Akbar की दहसाला प्रणाली पर भी इसका प्रभाव पड़ा।

3. सैन्य प्रशासन और सुरक्षा व्यवस्था :

शेरशाह ने सेना को प्रत्यक्ष नियंत्रण में रखा। उसने घोड़ों की दाग प्रथा और सैनिकों का चेहरा (हुलिया) रजिस्टर लागू किया, जिससे फर्जी नियुक्तियों पर रोक लगी।
बिहार, जो बंगाल और उत्तर भारत के बीच सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, वहाँ किलों और चौकियों की मरम्मत की गई। रोहतासगढ़ किला (बिहार) को उसने सामरिक दृष्टि से मजबूत किया। इससे अफगान शक्ति का आधार क्षेत्र सुरक्षित रहा।

4. सड़क और संचार व्यवस्था :

शेरशाह की प्रसिद्ध सड़क नीति ने बिहार को उत्तर भारत से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उसने प्राचीन उत्तरापथ को विकसित कर ग्रैंड ट्रंक रोड का निर्माण कराया, जो बंगाल से पंजाब तक जाती थी और बिहार से होकर गुजरती थी।
सड़क के किनारे सरायों का निर्माण,
प्रत्येक कोस पर मील पत्थर,
पेड़ों की कतारें और कुओं की व्यवस्था,
डाक-चौकियों की स्थापना,
इन व्यवस्थाओं से व्यापार, प्रशासन और सैन्य आवागमन सुगम हुआ। बिहार व्यापारिक दृष्टि से अधिक सक्रिय क्षेत्र बन गया।

5. मुद्रा और आर्थिक नीति :

शेरशाह ने रुपया नामक चाँदी का सिक्का प्रचलित किया, जो आगे चलकर भारतीय मुद्रा प्रणाली का आधार बना।
मानकीकृत वजन और शुद्धता
तांबे और सोने के सिक्कों का भी प्रचलन
बिहार के व्यापारिक नगरों—पटना और सासाराम—में आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ीं। मुद्रा की स्थिरता से आंतरिक व्यापार को प्रोत्साहन मिला।

6. न्याय व्यवस्था :

शेरशाह न्यायप्रिय शासक माना जाता है। बिहार में न्याय व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए—
परगना स्तर पर काजी और मुंसिफ की नियुक्ति
धार्मिक मामलों में इस्लामी कानून, परंतु हिंदुओं के लिए उनके रीति-रिवाजों के अनुसार न्याय
अपराध नियंत्रण हेतु कठोर दंड नीति
उसकी न्याय प्रणाली ने प्रशासनिक विश्वास को मजबूत किया।

7. धार्मिक नीति और सामाजिक दृष्टिकोण :

यद्यपि शेरशाह एक सुन्नी मुस्लिम शासक था, परंतु उसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति अपनाई। बिहार में हिंदू जमींदारों और प्रशासकों को भी पद दिए गए।
उसकी नीति व्यावहारिक थी—धर्म के बजाय प्रशासनिक दक्षता को महत्व दिया गया। इससे सामाजिक स्थिरता बनी रही।

8. शहरीकरण और स्थापत्य :

बिहार में सासाराम स्थित शेरशाह का मकबरा उसकी स्थापत्य कला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह स्थापत्य शैली आगे चलकर मुगल वास्तुकला को प्रभावित करती है।
पटना (तत्कालीन अजीमाबाद क्षेत्र) और अन्य नगरों में व्यापारिक गतिविधियों के विकास से शहरीकरण को बढ़ावा मिला।

9. बिहार के लिए दीर्घकालिक प्रभाव :

प्रशासनिक केंद्रीकरण की नींव पड़ी।
कृषि और व्यापार में स्थिरता आई।
सड़क और संचार से बिहार साम्राज्य का केंद्रीय क्षेत्र बना।
आगे के मुगल प्रशासन, विशेषकर अकबर की नीतियों पर प्रभाव पड़ा।
इतिहासकारों के अनुसार, शेरशाह की नीतियाँ “पूर्व-मुगल प्रशासन और मुगल प्रशासन के बीच सेतु” का कार्य करती हैं।

निष्कर्ष :

बिहार के संदर्भ में शेरशाह सूरी की प्रशासनिक नीतियाँ अत्यंत महत्त्वपूर्ण थीं। उसने बिहार को केवल अपने साम्राज्य का केंद्र ही नहीं बनाया, बल्कि प्रशासनिक सुधारों की प्रयोगशाला के रूप में विकसित किया। उसकी राजस्व, सैन्य, सड़क, मुद्रा और न्याय नीतियाँ न केवल तत्कालीन बिहार को

सुदृढ़ बनाती हैं, बल्कि भारतीय प्रशासनिक परंपरा को भी स्थायी दिशा देती हैं।
अल्पकालीन शासन के बावजूद शेरशाह ने बिहार को राजनीतिक स्थिरता, आर्थिक समृद्धि और प्रशासनिक दक्षता का मॉडल प्रदान किया, जिसने आगे चलकर मुगल प्रशासन की नींव को मजबूती प्रदान की।